शौण्डिक समाज के वेबसाईट में प्रकाशन हेतु
छत्तीसगढ़ प्रदेश शौण्डिक समाज,
रायपुर छ.ग.

सूड़ी–कथा

(बिन्दु से सिन्धु तक)

आरम्भ काल से आधुनिक काल तक सामाजिक परिवर्तनों का क्रमवार विश्लेषण ही सूड़ी–कथा सिर्फ एक जाति की कथा नहीं है बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि की कथा है। सृष्टि कालीन सूड़ी किसी एक जाति के नहीं थे, वे समस्त पृथ्वी वासियों में कल्याणकारी भावों व देवगुणों के प्रर्वतक थे। प्राचीन कालीन सूड़ियों के वंशज आज अन्य जातियों एवं अन्य धर्मो में भी हैं, जो सामाजिक, धार्मिक परिवर्तन के क्रम में अन्य जाति व धर्म में परिवर्तित हुए थे। इसलिए सभी जातियों व सभी धर्मों की यह कथा है।।

'सूड़ी' शब्द का अर्थ :–

'सूड़ी' शब्द अपभ्रंश भाषा (खड़ी बोली) का शब्द है, जो बंगाली, अंगिका एवं अति प्राचीन 'मण्डा' भाषा से आयातित है। इसे हिन्दी में सुधारकर पढेगें तो 'सूड़ी' शब्द 'सूरी' या 'सूर्वी' या 'श्री' शब्द बन जायेगा। जब संयुक्त अक्षरों का निर्माण हुआ तब सूरी के स्थान पर 'श्री' लिखा जाने लगा।

आर.एस. मिकग्रेगर द्वारा संकलित हिन्दी–इंग्लिश ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी एवं आर.सी. पाठक द्वारा संकलित हिन्दी–इंग्लिश भार्गव डिक्शनरी द्वारा सूरी (सूड़ी), सूरि का अर्थ निम्न प्रकार है।

सूरि– सूर्य, विद्वान मनुष्य, त्यागी।
सूरी– शिक्षित मनुष्य।
सूर– सूर्य, एक विद्वान, एक वीर तथा पठानों के बीच की एक जाति।
सूर – देव, सूर्य, शिक्षित मनुष्य, विद्वान मनुष्य, साधु।

इस प्रकार सूड़ी विद्वानों एवं श्रेष्ठ लोगों के वंशज है। प्रागैतिहासिक काल में वे विद्वान लोग धर्मात्मा थे, त्यागी थे, सज्जन पुरूष थे। वे लोग देवता के समान पूज्य थे। वे ज्ञान वीर थे। व कर्मवीर थे। इतिहास एवं पुराणों में इन्हें सूर्यवंशी लिखा गया है। व सूर्य विचारधारा मानते थे। उन्होंने सूर्य–चरित्र को अपने जीवन में अपनाया था। वे प्रकृति एवं सूर्य की पूजा करते थे। उनमें सर्वकल्याण की भावना थी। इसलिए समाज उन्हें देवतुल्य समझता था और देवता के समान आदर देता था। सूड़ी उन्ही महान पूर्वजों के वंशज है।

अतः सभी सूड़ियों को प्रातःकाल उठकर उन पूर्वजों का स्मरण करते हुए 'सूरि देवाः! नमस्तुभ्यै, नमस्तुभ्यै ! जाप करना चाहिए। सूरी सर्वजनस्य संस्कृति पूर्व सूर्यस्थ शिष्यः सूड़ि (सूर्य) विचारधारा (लाखों वर्ष पूर्व की बात है)

प्रकृति एवं सूर्य हमारे माता–पिता है। इन्होनें ही सभी सजीवों एवं निर्जीवों को उत्पन्न एवं विकसित किया है। इन्हें सम्मान दो। इनका आदर करो। इनकी पूजा करो। पेड़–पौधे, हवा, नदी एवं पृथ्वी के समस्त जीवों का आदर करो। उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण करो। सबसे प्यार करो। सब में परमात्मा को मानो। सबमें श्रेष्ठ तत्व है– ऐसा मानकर उनके महत्व को समझो। यही विचारधारा सूर्य (या सूडी) विचारधारा थी।

सूर्य निस्तंर गतिशील है हमें भी निरंतर कर्म करना चाहिए। सूर्य ऊर्जा एवं प्रकाश देते हैं, हमें भी ज्ञान और प्रेरणा देना चाहिए। सूर्य उदय एवं अस्त काल में लाल रहते हैं, हमें भी दुःख एवं सुख में एक समान रहना चाहिए। सूर्य अंधकार दूर करते हैं, हमें भी अज्ञानता दूर करनी चाहिए। यही विचारधारा सूर्य (सूड़ी) विचारधारा थी।

पौराणिक इतिहास में इस विचारधारा को कभी सूर्य मन, कभी सूर्यधर्म और सभी सूर्य (सूरि/सूड़ी) मत कहा गया। पौराणिक उल्लेख के अनुसार करीब एक लाख वर्ष पूर्व स्वायम्भुव मनु ने इस मत को आगे बढ़ाया। इस काल को पुराणों में प्रथम मन्वन्तर का काल कहा गया है। सातवें मन्वन्तर के प्रवर्तक वैवस्वत मनु ने मृतप्राय विचारधारा को पुनः पुर्नजीवीत किया। यह काल संभवतः आज से दस हजार वर्ष पूर्व का काल था । यह विचारधारा पहली बार कब शुरू हुआ? इस प्रश्न का उत्तर है–अनन्तकाल पूर्व शुरू हुआ क्योंकि सूर्य अनन्तकाल पूर्व से है। जब से जीवों को सोचने की शक्ति मिली है तब से यह विचारधारा है।

सूर्य–विचारधारा एक वैज्ञानिक विचारधारा थी। सूर्य संस्कृति प्रकृतिवादी होने के साथ–साथ एक वैज्ञानिक संस्कृति थी। प्रकृति के तत्वों के शोधकर्तागण रिसि (या ऋषि) मुनि कहलाते थे, जिसे हम आज की भाषा में तत्कालीन वैज्ञनिक कह सकते हैं। सूड़ी उन्हीं विज्ञान वादियों के वंशज हैं। आइए हम नई पीढ़ी को बतायें:–

"विज्ञानवादिनःसूरी, सर्वस्यसाथिनः सूरी।"

सूर्य–चरित (लाखों वर्ष पूर्व की बात है)

आकाशीय पिण्ड सूर्य के गुणों को मानवों में समावेश करने के लिए सूर्य–चरित्र की रचना हुई। सूर्य का मानवीकरण और मानवों को सूर्वीकरण किया गया। इस प्रकार सूड़ी वर्ग की उत्पत्ति हुई।

अगली पीढ़ी के लोगों में सूर्य–गुण बना रहे उसके लिए कर्मकाण्डों में सूर्य पूजा, सूर्य नारायण की पूजा आदि का भी समावेश हुआ। नदी, पहाड़, पेड़–पौधों व अन्य देवताओं की भी पूजा होने गली ताकि प्रकृति का संरक्षण हो सके। इस प्रकार एक पुरोहित वर्ग की उत्पत्ति हुई। भगवान सूर्य के चित्र में दिखता है कि उनके हाथ में शंख है। अतः पूर्व कालीन कुछ सूड़ी पुरोहित का भी कार्य करते थे, जैसे आज कुछ आदरणीय ब्राह्मण करते हैं। अतः हम कह सकते हैं–'सूरी पूरोहिताः। आदिधर्म रक्षिताः।" बाद के काल में सूड़ी वर्गों में कुछ कुरीतियाँ प्रवेश कर गई। सुड़ियों की आलोचनायें भी हुई। सूड़ियों के प्रभुत्व को चुनौती भी मिली। ऐसे ही विपरीत कालों में सूड़ी पूरोहित लोग ब्राह्मण पुरोहित में बदल गए।

"सूड़ी पुरोहिताः ब्राह्मण प्रर्वतिताः।"

सूर्यवंशः–

हिन्दी इंग्लिश भार्गव एवं ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में सूर्यवंश का निम्न अर्थ लिखा है।

सूर्यवंश–सूर्य जाति, इक्ष्वाकु से लेकर श्रीराम चन्द्र की वंशावलि क्षत्रियों की जाती।

पुराणों में उल्लेख है कि सातवें मन्वन्तर के समय में सूर्य के पुत्र विवस्वान थे। उनके पौत्र थे इक्ष्वाकु। पुस्तकों में इस वंश के ढाई सौ लोगों के नाम लिखे हुए मिले हैं। इनमें निम्न नाम प्रमुख हैं–पृथु, प्रसेन्नजीत, सत्यव्रत, हरिश्चन्द्र, सागर, भागीरथ, रघु, भगवान श्री राम, बृहदबल (महाभारत कालीन), शुद्धोधन एवं सिद्धार्थ (महात्मा बुद्ध)। संभव है कि ये नाम गुरू–शिष्य परम्परा के हो और वंशवादी शासकों के काल में उन्हें पिता–पुत्र परम्परा के नाम बता दिए गए हों। सूड़ी लोग उपरोक्त सूर्यवंशियों के वंशज या अनुयायी हैं। एक शोध के अनुसार श्री राम का जन्म 10 जनवरी 5114 ई.पू. को हुआ था।

0

सौण्डि/शुण्डि/शौण्डिक का अर्थ–

यह शब्द करीब 6000 वर्ष पुराना है। उस समय विद्वानों की भाषा इण्डो–यूरोपियन भाषा थी। इस भाषा में देव पुरूषों के लिए सन् शब्द का प्रयोग होता था। जैसे अंग्रेजी में पैंदज और हिन्दी में सन्त। संस्कृत भाषा अर्थात सन् कृत भाषा। इसे देव भाषा भी कहते हैं। सन् का अर्थ–अच्छाई एवं विद्वाता भी था।

अति प्राचीन काल में 'श' अक्षर नहीं था। 'श' के बदले 'स' का प्रयोग होता था। इसलिए उपरोक्त शब्दों का उच्चारण सान्डि या सन्डिक रहा होगा। अतः हम शौण्डिक को निम्न प्रकार परिभाषित करें:–

सूर्यमनाः शौण्डिकाः।
सन्डिक्ट्म् शौण्डिकम्।।

'कलचूरी' का अर्थ –

कलवार, कलाल, कलार आदि जातियों के लोग कलचूरि वंश से अपने आपको जोड़ते हैं। कलचूरि का शुद्धरूप है–'कालसूरि, जिसका अर्थ होता है–आरम्भकालीन सूरी (सूड़ी) लोग। जैसे–काल भैरव का अथ होता है–आरम्भकालीन देवता। उसी प्रकार कलचूरि (अर्थात् काल सूरि) का अर्थ है आरम्भकालीन सूर्य विचारधारा को मानने वाले लोग।

जयसवाल का अर्थ –

जयसवाल का शुद्ध रूप है– जयसूरिवाल, जयश्रीवाल। जिन लोगों ने सूर्य धर्म (हिन्दु संस्कृति) को ऊँचाई पर पहुँचाया था, वे जयसवाल लोग हैं।

पृथ्वी पर जीवों की उत्पत्ति –

विज्ञान में डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त है जो प्रयोगशाला में सिद्ध किया जा चुका है। इस सिद्धान्त के अनुसार सूर्य से पृथ्वी की उत्पत्ति हुई। पृथ्वी पर वायुमंडलीय गैसों से एक कोशीय जीव बना। फिर बहुकोशीय, फिर अनेक जीवों से होते हुए मनुष्य का क्रमानुसार विकास हुआ। इस प्रकार सम्पूर्ण प्रकृति का अंश हमारे शरीर एवं हमारी आत्मा में बसा है। विज्ञान के अनुसार ऊर्जा न उत्पन्न होती है और न ही खत्म होती है। एक तरह की ऊर्जा दूसरे तरह की ऊर्जा में बदल जाती है। धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार आत्मा न

जन्म लेती है और न ही खत्म होती है। आत्मा एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश कर जाती है। अगर हम आत्मा को प्राण–ऊर्जा का नाम दें तो सबको स्वीकार करना ही पड़ेगा कि हमारे शरीर में प्राण ऊर्जा देने वाला और प्राण ऊर्जा से शरीर चलाने वाला भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सूर्य है क्योंकि विज्ञान के अनुसार पृथ्वी पर सभी प्रकार के तत्वों एवं ऊर्जाओं की जननी सूर्य है। अतः समय का आदर करना सूर्य के प्रति कृतज्ञता दर्शाना, सभी प्राणियों को अपना परिवार समझना सभ्य मनुष्य की पहचान है। सूड़ियों (या सूर्य धर्म वासियों या सूर्य विचारधारा वालों) ने अनन्तकाल पूर्व से ही इस सभ्यता की रक्षा करने का प्रयास किया है। इस लिए सूड़ी विचारधारा एक सभ्य विचारधारा एवं एक वैज्ञानिक विचारधारा रही है।

'सूर्यमनाः सभ्यमनाः।"

क्या सूर्यवंशी या शौण्डिक क्षत्रिय थे?

'क्षत्रिय' शब्द का आधुनिक भाषा में अर्थ है– सैनिक क्या सूर्यवंशी या शौण्डिक सैनिक थे? इस प्रश्न का उत्तर है–लुटेरों के आक्रमण काल में सूर्यवंशी एवं शौण्डिक लोग सैनिक भी बने थे। उदाहरण के तौर पर गुरू गोविन्द सिंह (जो सूड़ी परिवार में जन्में थे) के बचपन का नाम था गोविन्द राय। मुगल आक्रमनकारियों से भारतीय विचारधारा एवं भारतीयों की रक्षा के लिए वे सैनिक बन गए एवं खालसा पंथ की स्थपना की। उन्होंने अपने नाम में सिंह धारण कर लिया जबकी सिख गुरुओं के नाम में सिंह शब्द का प्रयोग नहीं होता था।

हमारा धर्म मूल रूप में प्रकृतिधर्म था। प्राकृतिक संसाधनों के उत्तम संशोधन से भारतीय धरती हमेशा धनवान थी। इस लिए लुटेरे भारतीय भूमि पर आक्रमण करते रहते थे। उन्हीं से रक्षा के लिए सूर्यवंशियों या शौण्डिकों का एक वर्ग स्थायी रूप से सैनिक बन गया था। इसलिए कहा जाता है कि सूर्यवंशी या शौण्डिक क्षत्रिय थे।

शौण्डिकों को हैह्यवंशी कहा जाता है। महात्मा हैह्य के वंश में सहस्त्रार्जुन का उल्लेख है। पुराणों के अनुसार, सहस्त्रार्जुन सात द्वीपों के स्वामी थे उनकी कीर्ति अपरम्पार बताई गई है। सहसत्रार्जुन के समय में भारतीयों का सारे विश्व पर नियंत्रण था। यह काल संभवतः 8000 ई.पू. का काल था। तब की भाषा प्राकृत या मण्डा भाषा रही होगी, जिसे इतिहासकारों ने इन्डो–यूरोपियन भाषा का नाम दिया है। इस काल में भारतीय सूरि या शौण्डिक लोग सारे विश्व में फैले थे और प्रकृतिवादी सूर्य संस्कृति की महत्ता स्थापित किए थे। इसलिए अमेरिका के मूल निवासियों को रेड इन्डियन कहाजाता है। सूरीनाम नामक देश है। मिश्र में सूर्य में देवता को पूजा जाता था। कम्बोडिया एवं रोम में भी सूर्य देवता थे। बहुत से देशों के झंडे में सूर्य एवं तारों का चिह्न है। ईलैण्ड का एक हिस्सा जब रोमन साम्राज्य के अधीन था तो वहाँ अंग प्रदेश (अर्थात बिहार के मुंगेर, भागलपुर एवं निकटवर्ती जिलों) के निवासी रहते थे, जिन्हें अंगलिकन्स कहा जाता था। (जैसे आजकल विदेशों में भारतीय को इन्डियन्स कहते हैं) इंग्लिश का पुराना नाम अंगलिकन्स है। इसलिए इंग्लिश को हिन्दी में अंग्रेज (अंग+अर्य+ज) कहा जाता है।

क्या है हयवंशी लोग चन्द्रवंशी थे?

शौण्डिकों एवं हैह्वयवंशियों को कुछ लोग चन्द्रवंशी कहते है। चन्द्र मत को प्रकृति मत का एक हिस्सा मानते हुए भारतीय भूमि ने कई बार इसे स्वीकार किया है। इसलिए हिन्दी महीनों में शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पक्ष होता है, जो चन्द्रमा की कलाओं से तय होता है। मकर संक्रान्ति पर्व सूर्य की लाला से तय होता है। ज्योष्ठ, आषाढ़, सावन भादो आदि महीने प्रकृति की लीला से तय होते हैं। सहसत्रार्जुन ने सभी मतों का समन्वय कर भारतीय ज्ञान संपदा को और अधिक सम्पन्न किया था। आधुनिक काल में यही कार्य अंग्रेजों ने किया।

सहसत्रार्जुन कालीन सूड़ी लोग श्रेष्ठ लोग थे। उन्हे, चन्द्रवंशी, यदुवंशी या हैह्वयवंशी बताकर उनकी गरिमा को कम किया गया है। सहस्त्रार्जुन असीम अनन्त भावों के स्वामी थे। उन्हें किसी वंश, धर्म या जाति में बांधना अनुचित है। वे सभी के उपासक थे।

क्या सूड़ी वैश्य है?

आदिकाल में सूड़ी प्रकृति पूजक पुरोहित थे। फिर बहुत से सूड़ियों ने कृषि, पशुपालन एवं व्यापार अपनाया और वैश्य बन गए। इन वैश्यों के कारण भारत भूमि धनवान हो गई थी क्योंकि ऋषि (ऋषिगणों) के द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अनुसंधान से विविध खाद्य पदार्थ एवं वस्तुओं का श्रृजन हुआ था। धनवान भारत पर जब लुटेरे निरंतर आक्रमण करने लगे, तो बहुत से सूड़ियों को क्षत्रिय (सैनिक) बनना पड़ा। जब भारत भूमि पर सूड़ियों को नापसंद करने वालों का शासन आया तो सूड़ियों को निम्न भी बनना पड़ा। परन्तु सुड़िगण अपनी कर्मठता, लगनशीलता, व्यवहार कुशलता, सज्जनता और राष्ट्रहितवादिता के कारण इतिहास में अनेकों बार उठ खड़े हुए हैं।

आधुनिक काल में सूड़ी जाति में जन्में स्वर्गीय डॉ० कपिलदेव शास्त्री वाराणसी स्थित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में उपाचार्य (रीडर) के पद पर कार्यरत थे। उन्हें हम ब्राह्मन कह सकते हैं। जो लोग सेनाओं में एवं पुलिस में कार्यरत हैं उन्हें हम क्षत्रिय कह सकते हैं। अन्य सूड़ी लोगों को हम वैश्य कह सकते हैं। सूर्यवंशियों ने हड़प्पा एवं मोहनजोदाड़ो बसाई थी।

इतिहासकार प्रो. ए.एन. चन्द्रा ने कहा है कि सूर्यमत के संस्थापक वैवस्वत मनु ने अयोध्या राज्य की स्थापना की थी। इतिहासकार डॉ० राम विलास शर्मा ने अपनी पुस्तक अष्टाचक्रा अयोध्या में लिखा है कि अयोध्या वंशी भरतगणों ने हड़प्पा एवं मोहनजोदाड़ो जैसी उन्नत नगर सभ्यताओं को बसाया था। उन्होंने सूर्यवंशी (या सूर्यवादियों) के स्थान पर अयोध्यावंशी शब्द का प्रयोग किया है। कैंब्रिज विश्वविद्यालय के पुरातत्व विद प्रो० कालिन रेफ्रीव ने 1987 में लंदन से प्रकाशित पुस्तक 'आर्कियोलॉजी एण्ड लैंग्वेज में यह सिद्ध किया है कि सिन्धु नदी की सभ्यता एवं वैदिक आर्य सभ्यता एक ही सांस्कृतिक और भाषाई मूल की सभ्यतायें हैं। अतः स्पष्ट है कि ये सभी सभ्यतायें प्राचीन कालीन सूड़ियों की सभ्यतायें थीं।

वैदिक काल में बृबु सूड़ी–

2000 ई.पू. से 1000 ई.पू. तक के काल को वैदिक काल कहा जाता है। सुरीतियों (या श्रुतियों) का संकलन कर शास्त्र का रूप इसी काल में दिया गया था, जिसे वेद कहा जाता है। पूर्वकाल में भारतीय ज्ञान श्रुति परम्परा (अर्थात कहना–सुनना) द्वारा अगली पीढ़ी को अग्रसारित किया जाता था। अब यह ज्ञान शास्त्र के रूप में सबके लिए उपलब्ध था। प्रमाण मिलता है कि इस काल में एक समुदाय अफगानिस्तान से असम तक फैला था. जिसका सरदार बृबु सूड़ी था। सूड़ी (या सूरी) इसकी उपाधि थी। उन्हें सहस्त्रदातम भी कहा जाता था। कुछ लोगों ने समुदाय को पणिक (अर्थात धनवान) कहा है। कुछ लोगों ने इसे वैश्य या बनिया कहा है। इस काल में ये लोग संसार के अन्य हिस्सों से व्यापार कार्य करके भारत भूमि को धन देते थे।

विभिन्न धर्मों में सूर्यमत एवं सूड़ी समुदाय–

बुद्ध धर्म को कुछ लोग सूर्य मत या हिन्दुधर्म से अलग देखते हैं। भगवान बुद्ध सूर्यवंश में श्रीराम के 52 (बावन) पीढ़ी बाद उत्पन्न हुए थे ऐसा उल्लेख है। बुद्ध धर्म को अनेक देशों में समर्थन मिला। उस काल में पूर्व काल के सूर्यवादी (सूड़ी) लोग बौद्ध हो गए थे, जो सारे विश्व में फैले थे। इसलिए नालन्दा एवं विक्रमशिला विश्वविद्यालयों में सारे संसार से लोग शिक्षा ग्रहण के लिए आते थे। तब मंदिर या स्कूल नहीं थे। बौद्ध मठों में ही शिक्षा दी जाती थी। आज की भाषा में बुद्ध धर्म को हम एजुकेशन धर्म कह सकते हैं और तत्कालीन बौद्धों को एजुकेटेड परसन। उस समय बौद्धों को सूरिमन अर्थात श्रीमन कहा जाता था। इसी शब्द को अपभ्रंश भाषा में सूडीमन शब्द समझ सकते हैं। जब बौद्धधर्म का सफाया हुआ ब्रह्मन भाईयों ने सभी बौद्धों को कश्यप गोत्र दे दिया क्योंकि पुराणों में लिखा है कि कोई एक सूड़ी (सूर्य) महात्मा कश्यप के पुत्र थे।

जैन धर्म के धर्म प्रचारकों का उपनाम ही सूड़ी/सूरी हुआ करता था। जैसे–हेमचन्द्र सूरी, हीर विजय सूरी सिख धर्म के चौथे गुरू रामदास से लेकर गुरू गोविन्द सिंह जी तक सभी सूड़ी थे, जिसे पंजाबी (गुरूमुखी) भाषा में सोढ़ी कहा जाता है। उच्चारण में भिन्नता का कारणस्थान एवं काल है। सर्व विदित है कि सिख गुरूओं ने सूर्य धर्म (या हिन्दू संस्कृति) की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया था। सिख धर्म का नारा सत् श्री अकाल को अपभ्रंश भाषा में कहा जा सकता है–सत् सूड़ी अकाल।

ईसाई धर्म के प्रभु ईसा मसीह (जीसस क्राइस्ट) श्री नगर (कश्मीर) के बौद्ध मठ से शिक्षित यूरोप गए थे। कुछ लोग मानते है कि वे ईसान पंथी साधु थे। बाइबिल के अनुसार स्वर्ग में रहने वाले देवता को सराः (सराह) कहा गया है। अंग प्रदेश के विद्धानों की कवितायें 800 ई. में प्रकाशित हुई थी जिसे सराह कवितायें कहा जाता हैं। बंगाली में पिताको बाबा कहते हैं और साधु को भी। ईसाई धर्म में भी पिता को फादर कहते हैं औ चर्च के अधिकारी को भी। अमेरिका के झंडे में स्टार्स (अर्थात अनेको सूर्य) का होना भी पुष्टिकरता है कि ईसाई संस्कृति सूर्य संस्कृति के समन्वय से बनी थी।

शेरशाह सूरी, गोस्वामी तुलसीदास, महाराणा प्रताप एवं गुरूगोविन्द सिंह सूड़ी मूल के थे।

शेरशाह सूरी का नाम स्वतः प्रमाण है। किसी अन्य मुसलमान का नाम सूरी नहीं है। बंगाली में शेरशाह सूरी को सर साह सूरी लिखा जाता है। जब की भारत भूमि असम से अफगानिस्तान तक फैली थी तब सीमा की रक्षा के लिए सूड़ियों का एक दल कंधार में रखा गया था। जिसे वहाँ पठान कहा जाता था। इसलिए हिन्दी इंग्लिश भार्गव डिक्शनरी में सूर का एक अर्थ पठानों की जाती लिखा है। शेर शाह के पिता वहाँ नौकरी करते थे। शेरशाह का जन्म बिहार के रोहतास में हुआ था। उसे पठानों की भाषा पख्तुन बोलना भी नहीं आता था । वे तत्कालीन बिहार में ही पले बढ़े। वे सूड़ी वर्ग के व्यक्ति थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी सूड़ी मूल के व्यक्ति थे जो बाद में सरयु पारिण ब्रह्मन घोषित किए गए थे। सूर्य वंशियों से भावनात्मक जुड़ाव के कारण ही उन्होंने राम चरित मानस की रचना की थी।

महाराणा प्रताप सूर्य वंशी क्षत्रिय थे इसलिए उनके झंडे में सूर्य देव का चिन्ह होता था। 'राणा' शब्द सूर्यवंशी योद्धाओं के लिए प्रयुक्त होता था, जिसे सूरवीर (सूर्य वीर) कहा जाता था।

सिक्ख धर्म के चौथे गुरू रामदास से लेकर गुरू गोविन्द सिंह तक सभी सूड़ी थे। उसकाल में मुगलों से लड़ने वाले सभी लोग सूड़ी वर्ग के थे या सूड़ी वर्ग के समर्थक थे।

शेरशाह की मृत्यु हेमू सूरी की हार, महाराणा प्रताप की हार और गुरू गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद मुगल लोग भारत में स्थाई हो गए। अब पश्चिमोत्तर भारत के सुड़ी लोग अन्य जातियों में परिवर्तित हो गए। इसलिए पश्चिमोत्तर में में सुड़ी नामक जाति नहीं है। अन्य नाम धारण किए हुए सूर्य पूजक एवं प्रकृति पूजक जातिया हैं। सरयूपारिण एवं सारस्वत ब्राह्मण पूर्व काल के सूड़ी है। सूर्यवंशी राजपूत पूर्व काल के सुड़ी है। पिछड़े वर्ग, अनुसूचित जाति एवं जनजाति वर्ग की अनेकों जातियां सूड़ी या सूड़ी सूर्थक जातियां थी जो मुगलों से हार के बाद गुलाम बना दी गई थी। इन जातियों के धनवान लोग बाद में हिन्दुओं के धनवान जातियों में शामिल हो गए। इस प्रकार सूड़ी के भाई लोग अन्य जातियों एवं अन्य धर्मों में खो गए।

वर्तमान काल में सूड़ी एवं शौण्डिक वर्ग की स्थिति –

सभी सूड़ी लोग अति प्राचीन काल में श्रेष्ठ थे। वे परमज्ञानी थे। सद्ज्ञान सदाचार और सद्कर्म करके वे देवत्व एवं प्रभुत्व को प्राप्त किए थे। साधारण लोग भी कल्याणकारी भावनाओं से युक्त होने पर देवत्व को प्राप्त करते है। श्रेष्ठता का सम्मान, श्रृजनात्मकता की प्रवृत्ति, सामूहिकता समन्वयता का आचरण अपनाकर साधारण जातियां भी पृथ्वी पर प्रभुत्व प्राप्त करती है।

वर्तमान काल में सूड़ी के उपनाम हैं–कारक, खर्गा, गामी, गाई, चौधरी, नायक, पंजियारा, पांडे, महतो, महंथा, मण्डल, सेठ, महासेठ, साव, साहू, साह, सोढ़ी, सरकार, सिन्हा, सिंह, शाहा, राउत, प्रसाद एवं गुप्ता ।

छत्तीसगढ़ प्रदेश, बिहार एवं झारखण्ड में सूड़ी/शौण्डिक पिछड़े जाति में है। बंगाल एवं उड़ीसा में अनुसूचित जाति में है। पंजाब में ऊँची जाति में है। देश के विभिन्न हिस्सों में सूड़ी/शौण्डिक वर्ग की निम्न प्रमुख जातियों (टाइटल) में समाहित हैः–

साव, चौधरी, जायसवाल, वेलपुरिया, अहलुवालिया, कन्नोजिया, महोविया, कटकवार, सुल्तानपुरिया, उड़ेसनी, धूना, खौंजी, साहू, नशेरो, बसेर, पवैया, चौधरी, आर्य, वर्मा, कर्णवाल, सोमवंशी, कलचुरिया, धोमर, आयोध्यावासी, कल्याल, कलचर, कल, कटोरी, कुराया, कासरा, खरीदहा, सूंघा, खण्डेलवाल, गौड़, गुसहरे, गोलकास, खन्ना, खन्नी, खाकर, खेतानी, चौकसे, चौहान, चन्द्रावत, जैसलमेरी, जस्सार, जैन, (जायसवाल), जैन कसार, टॉक, डहरिया, उंड़वाल, डहरवाल, तोमड़, तोमडा, दण्डसेनी, नादेड़ा, पटेल, परेसा, पूर्विया, बाथम, बनोझिया, कलाल, बगेडा, विथारिया, भारी, भट्टी, भन्डारी, भोजपुरिया, माहेश्वरी, माहोर, माहूरे, माहूरी, माथुर, मुखारिया, मालवीय, मोढ़, खोलानी, गर्ग, गोलवारा, गोरधारा, मेघारा, मेघाढ़ा, मण्डल, महाजन, राम, राठौर, श्रीमाल, सुवासरा, सौलंकी, शाहा, शिवहरे, सेठ, हाड़ा, सावकसम, कोसरे, भारिमा, भणसार, ओमर, कखइया, टिक्कीवाल, धारवाल, नधेढ़िया, भौखरी, मुण्डल, पन्निकार, चोईसर, नाटर, भाटिला, ओमहरे, कुक्कर, कटारिया, कपूर, कंसल, कासरा, खण्डेरिया, गोयल, गोविल, कोठिया, अग्रहरि, कलाल, कल्यपाल, गंजवार सूड़ी, विटवार सूड़ी, धनेश्वर सूड़ी, चर्तुधान, भगेरा सूड़ी।